जनवरी २०१५

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

फ्रेन्डशिप

संपादकीय

बालमित्रों,

हमारे जीवन में सब से प्रिय में प्रिय व्यक्ति हो तो वह है फ्रेन्ड। फ्रेन्ड मिले तो समझो पूरी दुनिया मिल गई। लेकिन आजकल फ्रेन्ड के साथ भी कितने झगड़े होते हैं, सही है न? उससे हमें शिकायत बनी ही रहती है। जिसके साथ रोज़ खेलना है उसी से झगड़ना। ऐसा कैसे चलेगा?

तो आओ, आज हम इस अंक में पढ़ें कि सच्चे फ्रेन्ड कैसे होते हैं? सच्ची फ्रेन्डशिप कैसी होती है? अच्छे फ्रेन्ड किस तरह से बनें? यह सब समझकर अच्छे फ्रेन्ड बनने की शुरूआत करें।

- डिम्पल महेता

अनुक्रमणिका

३ ज्ञानी कहते हैं...
४ सच्ची दोस्ती
८ यह तो नई ही बात!
१० डेमन और पीथियस
१३ चलो खेलें...
१४ अपने आपको परखकर देखो
१६ ऐतिहासिक गौरवगाथाएँ
१८ मीठी यादें

फ्रेन्डशिप

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक : १०
अखंड क्रमांक : २२
जनवरी २०१५

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website:
kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

नीरू माँ : फ्रेन्ड उसे कहते हैं, जिसके बिना चले नहीं। एक दूसरे के पूरक बनकर रहें, उसे फ्रेन्डशिप कहेंगे। हमारी गलती हो गई हो फिर भी अपनी फ्रेन्डशिप में कुछ फर्क नहीं पड़े। बल्कि वह हमें सही रास्ता बताए कि "यह तेरी गलती हुई है, यह तेरे लिए हितकारी नहीं है, तू सावधान रहना।" हमें ऐसा समझाए। हमें सही रास्ते ले जाए।

प्रश्नकर्ता : मैं किसी से फ्रेन्डशिप करूँ तो वह टूट ही जाती है। फ्रेन्डशिप टूटने का क्या कारण है?

नीरू माँ : जब से उसके दोष दिखने शुरू हो जाते हैं तब से फ्रेन्डशिप टूटने लगती है। ज़रा सा हमारे बारे में उल्टा बोला या अच्छा न लगे ऐसा बोला कि तुरंत दरार पड़ जाती है, फिर मन मुटाव हो जाता है, एक दूसरे को देखना भी अच्छा नहीं लगता। जब नेगेटिव दिखाई दें तब प्रेम नहीं रहता। हमें बिल्कुल भी नेगेटिव नहीं देखना है। नेगेटिव नहीं हो तो अपने आप ही फ्रेन्डशिप टिकेगी।

प्रश्नकर्ता : हमें अपने फ्रेन्ड के साथ फ्रेन्डशिप टिकानी हो तो क्या करना चाहिए?

नीरू माँ : यदि फ्रेन्डशिप टिकानी हो तो आमने-सामने एडजस्टमेन्ट लेने ही पड़ते हैं। हमें फ्रेन्ड की थोड़ी-बहुत बातें अच्छी नहीं लगें, फिर भी चला लेना चाहिए, अपना वह चला ले, आमने-सामने ऐसा रहे तभी फ्रेन्डशिप टिकती है। लेकिन यदि ऐसा रखें कि मुझे जो अच्छा लगता है, वैसा ही वह करे तो धीरे-धीरे फ्रेन्डशिप टूट जाती है। बुद्धि फ्रेन्ड का नेगेटिव दिखाने लगती है। और जब से उसकी गलतियाँ दिखनी शुरू हुई तब से समझना कि अब फ्रेन्डशिप नहीं टिकेगी।

सच्ची दोस्ती

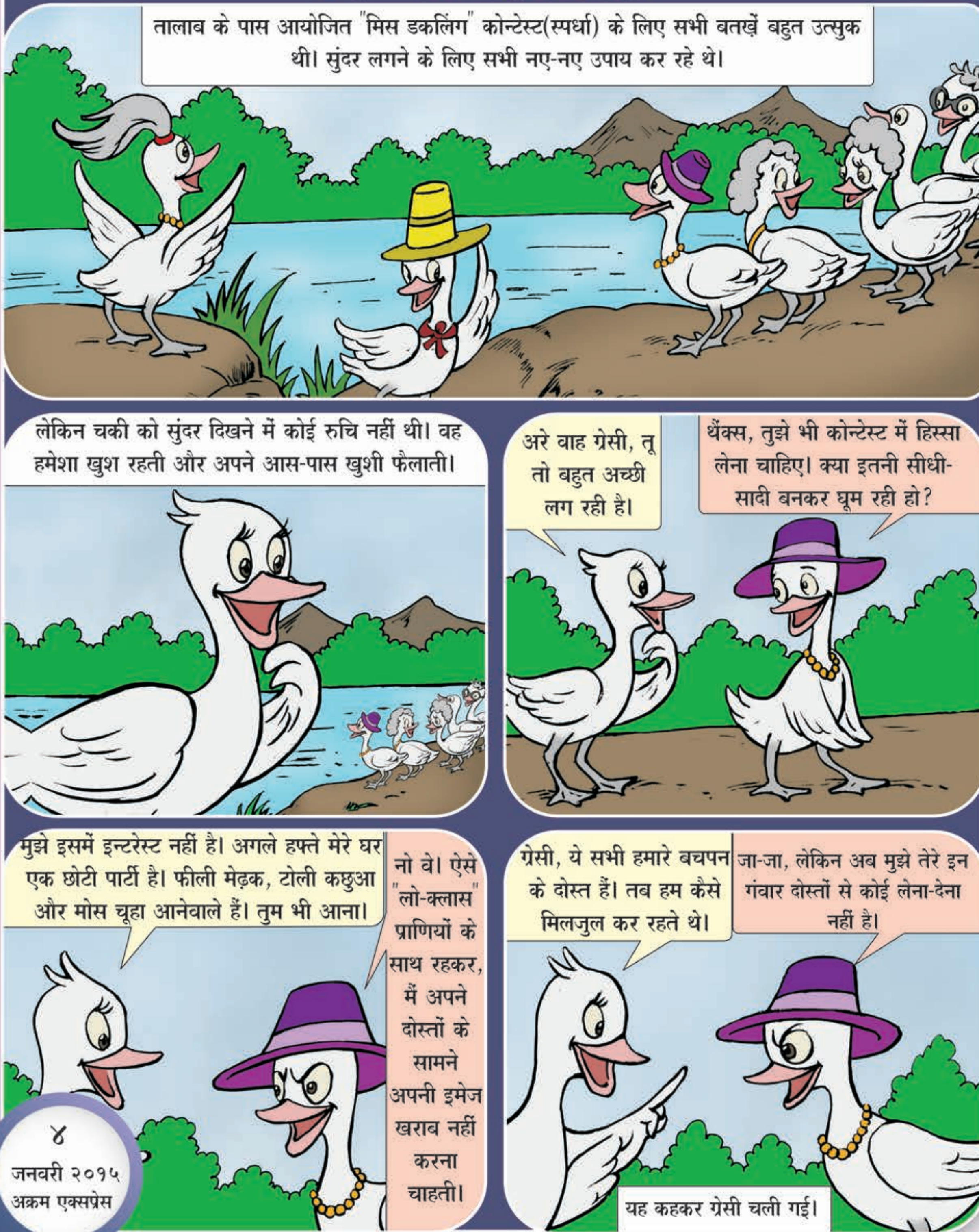
तालाब के पास आयोजित "मिस डकलिंग" कोन्टेस्ट(स्पर्धा) के लिए सभी बतखें बहुत उत्सुक थी। सुंदर लगने के लिए सभी नए-नए उपाय कर रहे थे।
लेकिन चकी को सुंदर दिखने में कोई रुचि नहीं थी। वह हमेशा खुश रहती और अपने आस-पास खुशी फैलाती।
अरे वाह ग्रेसी, तू तो बहुत अच्छी लग रही है।
थैंक्स, तुझे भी कोन्टेस्ट में हिस्सा लेना चाहिए। क्या इतनी सीधी-सादी बनकर घूम रही हो?
मुझे इसमें इन्टरेस्ट नहीं है। अगले हफ्ते मेरे घर एक छोटी पार्टी है। फीली मेढ़क, टोली कछुआ और मोस चूहा आनेवाले हैं। तुम भी आना।
नो वे। ऐसे "लो-क्लास" प्राणियों के साथ रहकर, मैं अपने दोस्तों के सामने अपनी इमेज खराब नहीं करना चाहती।
ग्रेसी, ये सभी हमारे बचपन के दोस्त हैं। तब हम कैसे मिलजुल कर रहते थे।
जा-जा, लेकिन अब मुझे तेरे इन गंवार दोस्तों से कोई लेना-देना नहीं है।
यह कहकर ग्रेसी चली गई।

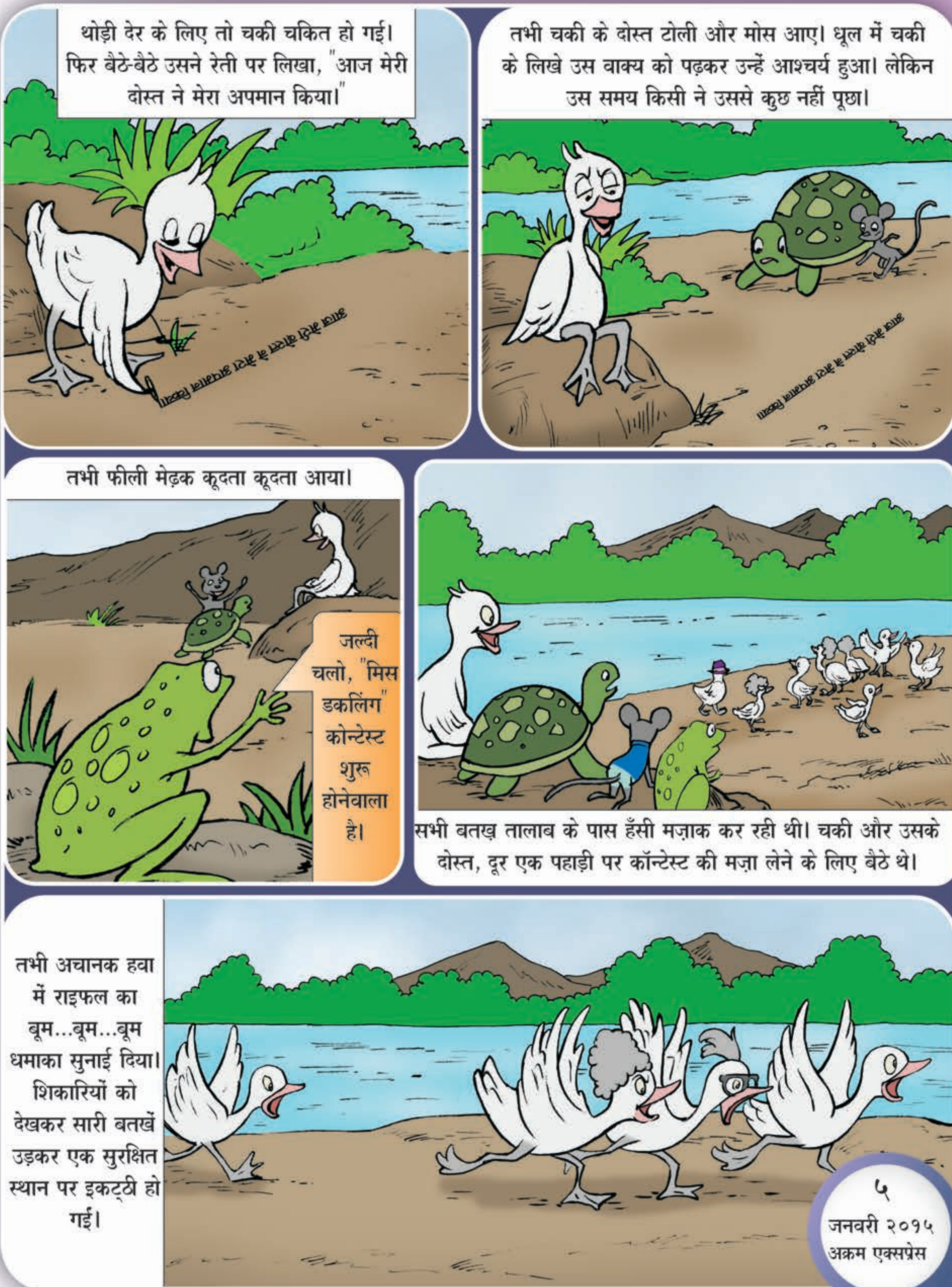
थोड़ी देर के लिए तो चकी चकित हो गई। फिर बैठे-बैठे उसने रेती पर लिखा, "आज मेरी दोस्त ने मेरा अपमान किया।"
तभी चकी के दोस्त टोली और मोस आए। धूल में चकी के लिखे उस वाक्य को पढ़कर उन्हें आश्चर्य हुआ। लेकिन उस समय किसी ने उससे कुछ नहीं पूछा।
तभी फीली मेढ़क कूदता कूदता आया।
जल्दी चलो, "मिस डकलिंग" कोन्टेस्ट शुरू होनेवाला है।
सभी बतख़ तालाब के पास हँसी मज़ाक कर रही थी। चकी और उसके दोस्त, दूर एक पहाड़ी पर कॉन्टेस्ट की मज़ा लेने के लिए बैठे थे।
तभी अचानक हवा में राइफल का बूम...बूम...बूम धमाका सुनाई दिया। शिकारियों को देखकर सारी बतखें उड़कर एक सुरक्षित स्थान पर इकट्ठी हो गईं।

सभी बतखें सुरक्षित थीं, लेकिन ग्रेसी को बहुत चोट लगी थी। चकी, ग्रेसी के पास गई।
ग्रेसी चिंता मत करो। तुम ठीक हो जाओगी।
चकी ने अन्य बतखों से ग्रेसी के लिए मदद माँगी, लेकिन सभी ने मुँह मोड़ लिया।
ओह नो! हम अपने सुंदर पंख गंदे नहीं करेंगे।
और धीरे-धीरे ग्रेसी के दिखावटी दोस्त ग्रेसी को घायल अवस्था में छोड़कर चली गई।
चकी के दोस्त मोस, फीली और टोली ग्रेसी की मदद के लिए दौड़कर आए और ग्रेसी को उठाकर चकी के घर ले गए।
कुछ घंटों बाद ग्रेसी स्वस्थ हो गई।
चकी, जिन्हें मैं अपना दोस्त समझती थी उन्होंने ज़रूरत के समय मुझे छोड़ दिया। और तुम लोगों ने मेरी जान बचाई।
ग्रेसी, सच्ची दोस्ती इसे ही कहते हैं कि ज़रूरत के समय एक दोस्त दूसरे दोस्त की हेल्प करे और देखभाल भी करें।

अब ग्रेसी को सच्ची फ्रेन्डशिप का मतलब समझ में आ गया। उसने सच्चे दिल से चकी, मोस, फीली और टोली से माफी माँगी।
बाहर जाकर चकी ने एक पत्थर पर कुरेदा (अंकित किया), "आज मेरे दोस्तों ने एक और दोस्त की जान बचाई" उसी समय मोस, फीली और टोली वहाँ आई।
आज मेरे दोस्तों ने एक और दोस्त की जान बचाई
चकी, जब ग्रेसी ने तुझे धक्का मारा, तब तूने धूल में लिखा, और अभी पत्थर पर कुरेदा, ऐसा क्यों?
जैसे धूल में लिखा हुआ हवा से मिट जाता है, वैसे ही यदि कोई दोस्त हमें दुःख दे तो उस पीड़ा को क्षमा से मिटा देना चाहिए और दोस्त का नेगेटिव नहीं देखना चाहिए।
यदि कोई दोस्त कुछ भला करे, तो उस भलाई को पत्थर पर कुरेदकर लिखा हो उसी तरह दिल में लिखकर रखना चाहिए और कभी भी नहीं भूलना चाहिए।
कोने में खड़ी ग्रेसी ने चकी की बातें सुनी। उसे फ्रेन्डशिप की सही कीमत समझ में आई। उसी समय उसने तय किया कि जीवन में उसे कैसे दोस्त बनाने चाहिए और खुद कैसा दोस्त बनना चाहिए।

फ्रेन्डशिप में अच्छे फ्रेन्ड बनने की शुरूआत हमें ही करनी है। हमें जो अच्छा नहीं लगता, वह हमें किसी के साथ नहीं करना चाहिए। यदि हम से हमारा फ्रेन्ड बार-बार रूठ जाए, हमें अपनी चीज़ न दें, मुँह बिगाड़कर घूमे, दूसरे को दुःख हो ऐसा व्यवहार करे या ऐसा कुछ भी करे जो हमें अच्छा नहीं लगता हो तो हमें भी दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। वर्ना कोई हमारा फ्रेन्ड बनना पसंद नहीं करेगा।

यह तो

साथ ही साथ सामनेवाला अच्छा नहीं लगे ऐसा कुछ भी करे तो उसका नेगेटिव देखने के बजाय उसके लिए दिल से प्रार्थना करना और यदि अपने से किसी को दुःख हो जाए तो दिल से माफी माँगकर वापस पलट जाना।

फ्रेन्ड के लिए नेगेटिव हो तो उसमें सहमत नहीं होना, "मैं इसमें ज़रा भी सहमत नहीं हूँ," ऐसा कहकर उखाड़कर फेंक देंना। तभी फ्रेन्डशिप टिकेगी।

नई ही बात!

फ्रेन्डशिप में ऐसा नहीं होना चाहिए कि फ्रेन्ड हमारा काम कर दे, तभी हम उसका काम करें। यदि वह हमारा कुछ बिगाड़ दे तो हम भी उसका बिगाड़ दें। तो ऐसी फ्रेन्डशिप की कीमत ही क्या? यह तो चने-मूँगफली जैसी फ्रेन्डशिप कहलाएगी।

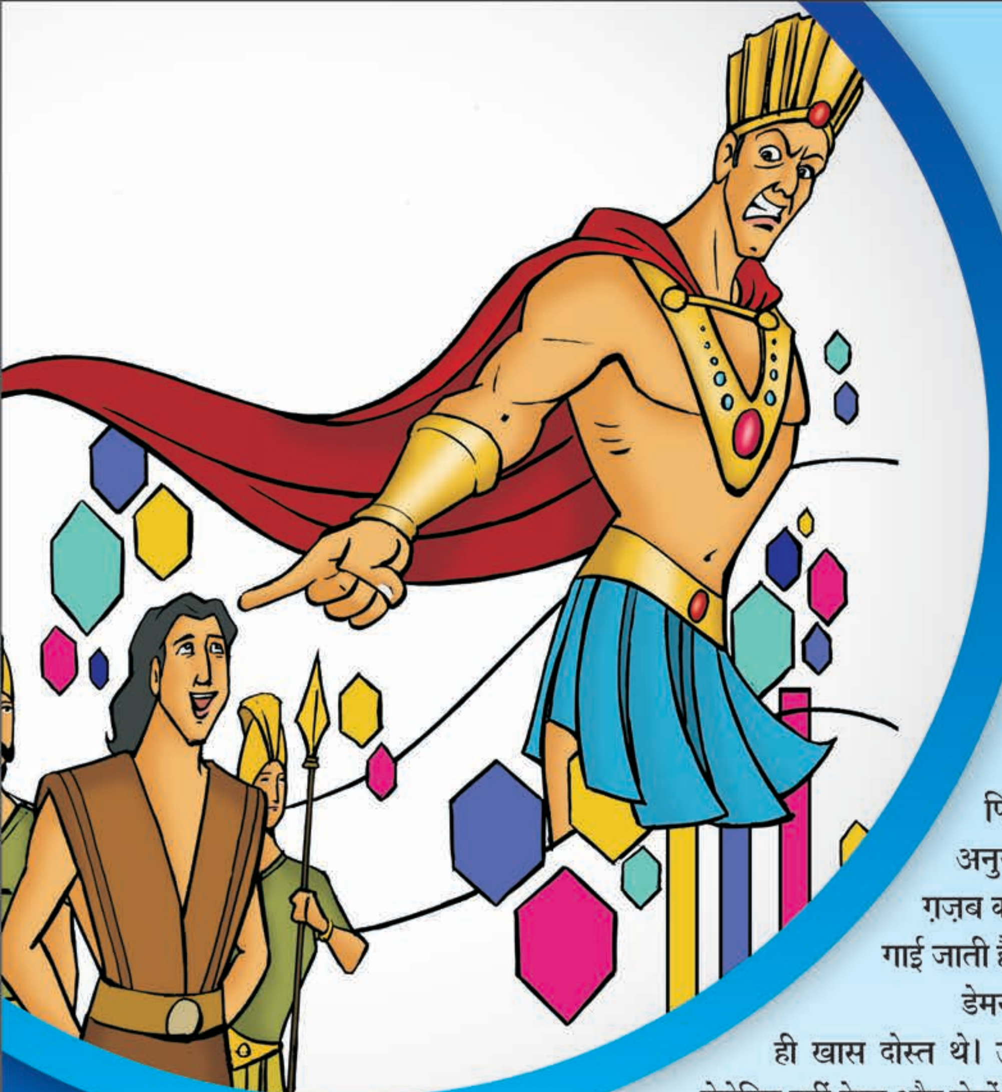

डेमन और पीथियस

हज़ारों साल पहले की बात है। क्राइस्ट से पहले की चौथी सदी में, फिलॉसोफर पायथागोरस के अनुयाई डेमन और पीथियस की ग़ज़ब की मित्रता की बातें आज भी गाई जाती हैं।

डेमन और पीथियस बचपन से ही खास दोस्त थे। उन्होंने कभी एक दूसरे का नेगेटिव नहीं देखा और दोनों को एक दूसरे के प्रति संपूर्ण विश्वास था। दोनों के दिल में भरोसा था कि ज़रूरत के समय दोनों एक दूसरे के लिए तैयार ही रहेंगे। एक बार दोनों की दोस्ती की कड़ी परीक्षा का समय आ गया।

एक बार ऐसा हुआ कि जब सिरेक्यूस का राजा डायनिस्यस ने पीथियस के सार्वजनिक भाषण सुने, तब उन्हें पीथियस पर बहुत गुस्सा आया। पीथियस अपने भाषणों में लोगों से कहता कि किसी भी व्यक्ति का अन्य व्यक्ति पर असीमित कब्ज़ा नहीं होना चाहिए। ऐसा कब्ज़ा रखनेवाले सत्ताधीश, जुल्मी और अन्यायी कहलाते हैं।

क्रोधित राजा ने डेमन और पीथियस को अपने दरबार में बुलाया।

पीथियस को धमकी देते हुए कहा, "तुम राजद्रोह की बातें फैला रहे हो। तुम अपने वचन वापस ले लो, नहीं तो तुम्हें बहुत बुरे परिणाम भुगतने पड़ेंगे।"

"यदि किसी राजा ने प्रजा से पूछे बिना अपने हाथ में सत्ता ले ली हो तो वह अन्याय ही है और वह वचन मैं कभी वापस नहीं लूँगा" पीथियस ने निडरता से अपना अभिप्राय राजा को बता दिया। "तो फिर तुम्हें मरना पड़ेगा। तुम्हारी कोई अंतिम इच्छा है?"

किसी भी तरह की दया के बगैर राजा ने फैसला सुना दिया।

"हाँ, आप मुझे एक बार घर जाने की अनुमति दीजिए, ताकि मैं अपनी पत्नी और बच्चों से मिल आऊँ" बहुत ही नम्रता से पीथियस ने अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त की।

व्यंगपूर्ण हास्य के साथ राजा बोले, "मुझे लगता है कि मैं तुम्हें सिर्फ जुल्मी या अन्यायी ही नहीं, लेकिन बेवकूफ भी लगता हूँ। लेकिन मैं उतना बेवकूफ नहीं हूँ जितना तुम समझ रहे हो। यदि मैं तुम्हें मेरे नगर से बाहर जाने दूँगा तो मुझे पूरा भरोसा है कि तुम वापस नहीं आओगे।"

"मैं आपको गारन्टी देता हूँ कि मैं वापस आऊँगा।" पीथियस ने कहा।

"ऐसी तो कौन सी गारन्टी तुम मुझे दे सकते हो ताकि मुझे विश्वास हो कि तुम वापस आओगे?"

"ठीक है, मुझे मंजूर है। लेकिन डेमन, यदि तुम्हारा दोस्त पीथियस वापस नहीं लौटा तो उसका मृत्युदंड तुम्हें मिलेगा। तुम्हें मंजूर है?"

उसी समय, पीथियस का खास दोस्त डेमन, जो अपने दोस्त के पास शांति से खड़ा था, वह बोल उठा, "मैं पीथियस की गारन्टी लेता हूँ। जब तक पीथियस वापस नहीं आता, तब तक आप मुझे कैद कर सकते हैं। हमारी दोस्ती के बारे में सब जानते हैं। इसलिए आपको भरोसा रहेगा कि पीथियस ज़रूर वापस लौटेगा।"

थोड़ी देर के लिए राजा चुप हो गया। फिर बोला, "ठीक है, मुझे मंजूर है। लेकिन डेमन, यदि तुम्हारा दोस्त पीथियस वापस नहीं लौटा तो उसका मृत्युदंड तुम्हें मिलेगा। तुम्हें मंजूर है?"

"पीथियस ज़रूर वापस आएगा। इसमें मुझे बिल्कुल भी शंका नहीं है।" पूरे विश्वास से डेमन बोला। और इस तरह पीथियस को थोड़े दिन के लिए मुक्त किया गया और डेमन अपने दोस्त के लिए जेल का कैदी बना।

दिन गुज़रने लगे। जब कई दिनों तक भी पीथियस वापस नहीं लौटा, तब राजा को डेमन की परिस्थिति देखने की इच्छा हुई। राजा को देखना था कि डेमन को अपने निर्णय पर पश्चाताप हो रहा है या नहीं।

राजा ने डेमन से जाकर पूछा, "समय पूरा होनेवाला है लेकिन पीथियस के लौटने की कोई खबर नहीं आई। मूर्ख, तुमने दोस्त पर कितना गलत विश्वास किया? तुम्हें लगा कि वह तुम्हारे लिए अपना जीवन बलिदान करने के लिए वापस लौटेगा?"

बहुत ही स्थिरता से डेमन ने कहा "मुझे पूरा भरोसा है कि वह वापस लौटने का पूरा प्रयत्न कर रहा होगा। किसी खास कारण से ही वह अभी तक वापस नहीं लौट पाया है। लेकिन

उसके लिए मुझे रत्तीभर भी शंका नहीं है।" डेमन का विश्वास देखकर राजा स्तब्ध रह गया। "जल्द ही पता चल जाएगा।" ऐसा कहकर राजा जेल से बाहर चला गया।

और आखिर में सज़ा का दिन आ ही गया। डेमन को जेल से बाहर निकालकर फाँसी देने की जगह पर ले जाया गया। "तुम्हारा दोस्त तो आया नहीं" अट्टहास करते हुए राजा ने कहा, "अब बताओ तुम उसके बारे में क्या सोचते हो?"

"वह मेरा दोस्त है। मुझे उस पर पूरा विश्वास है। मुझे उसका एक भी दोष नहीं दिखाई देता" डेमन ने जवाब दिया।

तभी अचानक दरवाज़ा खुला और घायल पीथियस अंदर आया। अपने दोस्त को जीवित देखकर उसे बहुत खुशी हुई।

दौड़कर अपने दोस्त के गले लग गया, "प्रभु का लाख-लाख धन्यवाद कि तुम सुरक्षित हो। ऐसा लग रहा था कि जैसे विधाता को अपनी दोस्ती की परीक्षा लेनी थी। वापस लौटते समय मेरा जहाज तूफान में फँस गया था। उस तूफान से बचा तभी रास्ते में डाकुओं ने मुझ पर हमला कर दिया। लेकिन मैंने आशा नहीं छोड़ी और आखिर मैं समय पर पहुँच गया। मैं अपनी फाँसी की सज़ा स्वीकार करने को तैयार हूँ।"

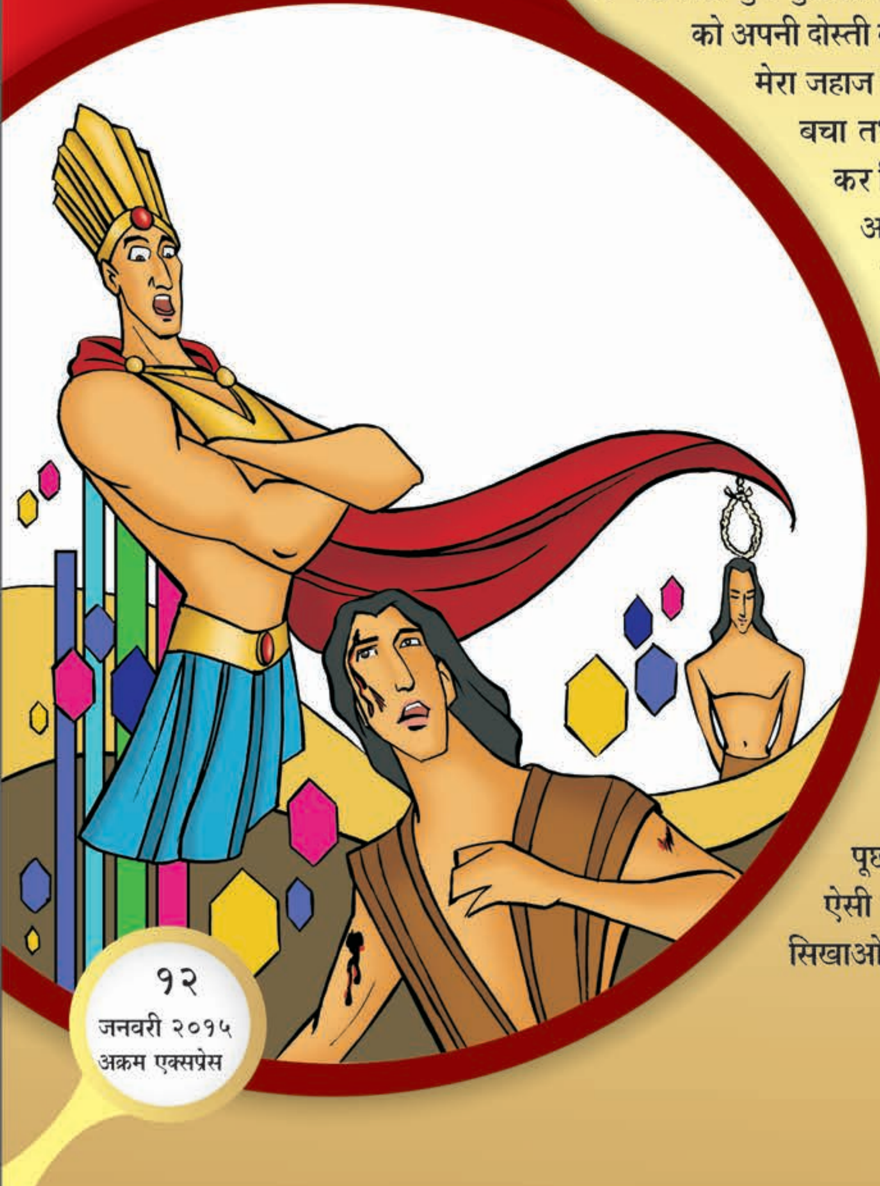

पीथियस के शब्द सुनकर राजा को बहुत आश्चर्य हुआ। ऐसी पक्की दोस्ती देखकर राजा की आँखें खुल गई। उसने ऐलान किया, "मैं फाँसी की सज़ा वापस ले रहा हूँ। "मित्रता पर इतना विश्वास और प्रेम संभव है" यह दिखाने के लिए मैं तुम्हें स्वतंत्रता देकर पुरस्कार देता हूँ। लेकिन एक विनती है।"

"क्या विनती है?" दोस्तों ने पूछा। राजा ने विनम्रता से कहा, "मुझे भी ऐसी अद्भुत दोस्ती सीखनी है। मुझे सिखाओगे?"

१. नीचे दिए गए चित्रों मेंसे १० फर्क ढूढों.

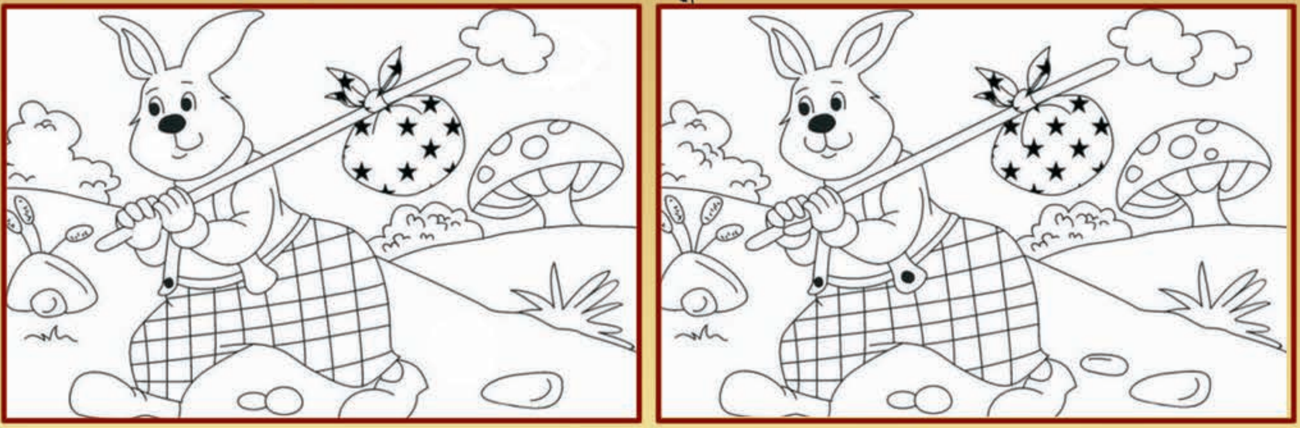

चलो खेलें!...

२. दिए गए चार रास्तों में से सही रास्ता ढूंढे.

३. दिए गए बिंदुओं को जोडो.

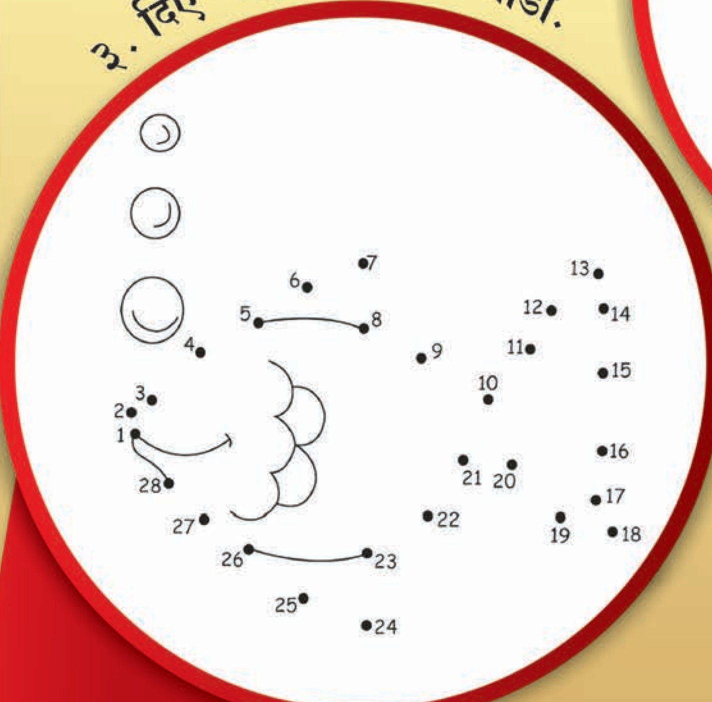

अपने आपको परखकर देखो !

इस अंक से हमें सुंदर समझ मिली कि "सच्ची फ्रेन्डशिप" कैसी होती है। तो चलो इस से हम रोनक की मदद करते हैं। फ्रेन्डशिप डे के दिन रोनक अपने "सच्चे फ्रेन्ड्स" को फ्रेन्डशिप बेल्ट बाँधना चाहता है।

नीचे दिए गए प्रसंगों में रोनक के सच्चे फ्रेन्ड्स पहचानें। रोनक को किस किस को फ्रेन्डशिप बेल्ट बाँधनी चाहिए और किसे नहीं, इसे कारण के साथ नीचे के टेबल में लिखिए।

पलंग पर सोते-सोते रोनक करवटें बदल रहा था। उसका बुखार नहीं उतरा था। तभी फोन की घंटी बजी। "आन्टी मैं सुमित बोल रहा हूँ। आज स्कूल में दिए गए नोट्स देने आऊँ?" सुमित ने विनयपूर्वक रोनक की मम्मी से पूछा।

जब से रोनक बीमार हुआ था, तब से रोज़ शाम को स्कूल के बाद सुमित रोनक को नोट्स देने आता। इतना ही नहीं, रोनक की नोटबुक में लिखकर भी देता।

तबियत ठीक होते ही रोनक ने अपने दोस्तों के साथ पिकनिक पर जाने का प्लान बनाया। पूरा दिन साथ में बिताने के बाद, शाम को प्रतीक ने रोनक को इशारा किया, "अब से हम कार्तिक को साथ में नहीं ले जाएँगे। मुझे उसके साथ अच्छा नहीं लगता। बिल्कुल उल्लू जैसा है। तुझे पता है आज उसने क्या किया?"

"क्या?" रोनक ने उत्सुकता से पूछा।

प्रतीक के कुछ कहने से पहले गौतम ने उसे रोका, "कार्तिक हमारा दोस्त है। उसकी नेगेटिव बातों की चर्चा हमें नहीं करनी चाहिए।

उसका पॉज़िटिव देखकर उसके साथ एडजस्ट करेंगे तो हमें एक दूसरे के साथ कितना मज़ा आएगा।

गौतम, प्रतीक और रोनक की बातें चल रही थी तभी दोस्तों की टोली आ गई। सभी को तेज़ भूख लगी थी।

पास के रेस्टोरन्ट में जाकर सभी ने पाऊभाजी खाने का प्लान बनाया। रोनक सभी को ट्रीट देनेवाला था। बिल देखकर शिव मुस्कुराया, "रोनक, तेरा तो आज का दिन अच्छा गया। होटलवाले ने तेरा फायदा करा दिया। उसने भूल से नौ प्लेट के बजाय छः प्लेट के पैसे ही चार्ज किए हैं। चलो उसे पता चले उससे पहले ही हम फटाफट बिल चुकाकर भाग लेते हैं।"

"नहीं रोनक, हमें ऐसा गलत करने की क्या ज़रूरत है? ऐसी अप्रामाणिकता हमें नहीं शोभा देती" ध्रुव ने शांति से कहा।

बिल चुकाकर सभी रेस्टोरन्ट के बाहर थोड़ी देर बातें करने के लिए खड़े थे।

"यार, तुम लोगों की साइन्स के टेस्ट की तैयारी कैसी है? मेरी तो कोई खास तैयारी नहीं हुई" रोनक बोला।

"अरे, इसमें चिंता की क्या बात है? बिन्दास रहना चाहिए दोस्त।" रोनक के कंधे पर हाथ रखकर पुनीत बोला, "इस बार मैं अपनी नकल की पर्ची तेरे साथ शेयर करूँगा।"

"लेकिन साइन्स टेस्ट को तो अभी एक हफ्ता बाकी है। तैयारी के लिए अपने पास पूरा समय है। चीटिंग करके मार्क्स लेने का क्या फायदा? अगर ज़रूरत हो तो मैं तेरे साथ पढूँगा। लेकिन हमें चीटिंग नहीं करनी चाहिए।" अभिषेक बोला।

अब नीचे की टेबल में कारण सहित लिखिए कि रोनक को किसे फ्रेन्डशिप बेल्ट बाँधना चाहिए और किसे नहीं।

फ्रेन्ड्स	बेल्ट बाँधनी है (हाँ/ना)	कारण
सुमित		
प्रतीक		
गौतम		
ध्रुव		
शिव		
अभिषेक		
पुनीत		

शालिभद्र - २

(पिछले अंक में हमने देखा कि अपार समृद्धि के स्वामी शालिभद्र अपनी ३२ रानियों के साथ दुनिया के सुख भोगने में मग्न थे। पिता जी की मृत्यु के बाद उनकी माता जी ने घर का सारा कारोबार संभाल लिया था। एक दिन राजा श्रेणिक उनके घर पधारे। माता ने पुत्र को राजा से मिलने के लिए नीचे बुलाया। आनाकानी करने पर माता ने पुत्र को समझाया कि वे हमारे स्वामी हैं। स्वामी शब्द से शालिभद्र को अपनी पराधीनता का ख्याल आया। उन्होंने अपना स्वतंत्र सुख पाने के लिए दीक्षा लेने का निर्णय किया। माता के कहे अनुसार वे रोज़ एक-एक स्त्री को छोड़ते गए। अब आगे पढ़िए...)

उसी नगर में शालिभद्र के बहन-बहनोई सुभद्रा और धन्य श्रेष्ठी भी रहते थे। सुभद्रा को जब इस बात का पता चला कि उसका भाई स्त्री परिवार को त्यागकर संयम धर्म अंगीकार करनेवाला है तब उनके हृदय को आघात लगा। धन्य कुमार को स्नान कराते हुए उनकी आँखों से आँसू गिर गए। आँसू धन्यकुमार के शरीर पर गिरते ही उन्होंने सुभद्रा से रोने का कारण पूछा। उनकी बात सुनकर वे बोले, "इसमें रोना क्या? संयम के रास्ते पर जानेवाले भाई को देखकर तो बहन को खुश होना चाहिए, गर्व होना चाहिए। यह कायर का काम नहीं है। शालिभद्र तो डरपोक है इसलिए रोज़ एक-एक स्त्री का त्याग कर रहा है। ज़हर क्या धीरे-धीरे छोड़ा जाता है? वो तो एक झटके से ही छोड़ देना चाहिए।"

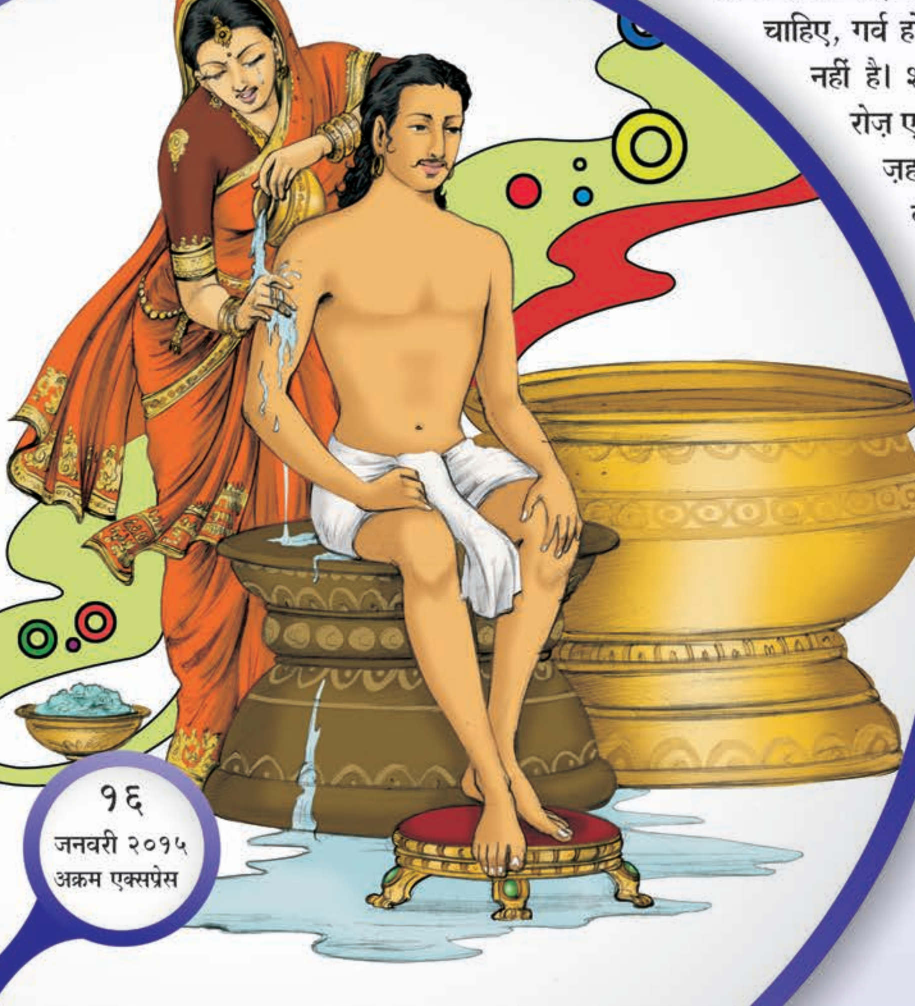

इस इशारे का जवाब देते हुए सुभद्रा बोल पड़ी, "कहना आसान है करना मुश्किल है। करोगे तब पता चलेगा कि कैसे किया जाता है?"

उसी समय धन्यकुमार खड़े हो गए और बोले, "लो तो मैंने आज से ही आठों को छोड़ दिया।" कहकर उन्होंने आठों पत्नियाँ और घरबार सभी का त्याग करने की घोषणा कर दी।

शालीभद्र के यहाँ जाकर उन्होंने अपने निश्चय के बारे में बताया और उसे तैयार होने के लिए बोल दिया। दोनों ने भगवान महावीर से दीक्षा ली। उसके बाद दोनों मुनि शास्त्र-ग्रंथों का विधिपूर्वक अध्ययन करते और तीक्ष्ण तप करने लगे। उग्र तपस्या के कारण दोनों के शरीर सूख गए।

बहुत समय बीत गया। घूमते-घूमते एक दिन वे श्री वीर भगवान के साथ अपनी जन्म भूमि राजगृह नगर में आए। उस समय महीने के उपवास का पारणा करने के लिए भिक्षा माँगने की अनुमति लेने के लिए भगवान के पास आए। तब भगवान ने शालिभद्र से कहा, "आज तुम्हारी माता से मिले हुए आहार से तुम्हारा पारणा होनेवाला है।"

"खुद की खीर खाने की तीव्र इच्छा होने के बावजूद संगमक ने खुद का मनपसंद खाना खुशी-खुशी मुनि को दे दिया।"

शालिभद्र और धन्य, भद्रा सेठानी के घर के आगे खड़े थे। तपस्या से उनका शरीर एकदम दुर्बल हो गया था, इसलिए कोई उन्हें पहचान नहीं पाया। महावीर भगवान के आगमन का समाचार सुनकर भद्रा सेठानी तो पहले ही भगवान के निवास पर जाने के लिए निकल गई थी।

थोड़ी देर घर के पास खड़े रहने के बाद दोनों मुनि वापस चले गए। जब वे नगर के दरवाज़े से बाहर निकल रहे थे उसी समय नगर में दही-घी बेचने आनेवाली (बेचनेवाली) एक ग्वालन उन्हें मिली। शालिभद्र को देखकर उनमें वात्सल्य भाव प्रकट हुआ और उन्होंने दोनों मुनिओं को दही खिलाया।

भगवान के पास आकर शालिभद्र ने नम्रतापूर्वक भगवान से पूछा, "भगवान आपके कहे अनुसार मुझे मेरी माता से पारणा के लिए आहार क्यों नहीं मिला?"

भगवान बोले, "हे मुनि, तुम्हें दही खिलानेवाली ग्वालन तुम्हारे पिछले जन्म की माँ ही थीं। पिछले जन्म में तुम राजगृह के पास शाली गाँव की धन्या नाम की ग्वालन के संगमक नामक एक ही पुत्र थे। एक बार किसी उत्सव के समय घर-घर खीर बनी। दूसरे बच्चों को खीर खाते देखकर संगमक घर आकर अपनी माँ से खीर माँगने लगा। खीर बना सकें, उनकी स्थिति ऐसी नहीं होने की वजह से धन्या ग्वालन को बहुत दुःख हुआ। वह रोने लगी। पड़ोसियों ने उनके रोने का कारण सुनकर, दया भाव से थोड़ा दूध-घी आदि उन्हें खीर बनाने के लिए दिया। उनसे उन्होंने खीर बनाई। संगमक को खीर परोसकर वे घर के काम में व्यस्त हो गई।

इतने में कोई मुनि भिक्षा माँगने के लिए वहाँ आए। भूखे और दुर्बल मुनि को देखकर संगमक ने अपनी खीर उन्हें दे दी। मुनि बहुत प्रसन्न हुए और संगमक को आशीर्वाद देकर चले गए। खुद की खीर खाने की तीव्र इच्छा होने के बावजूद संगमक ने खुद का मनपसंद खाना खुशी-खुशी मुनि को दे दिया। अपने इस उच्च कर्म के प्रभाव से, अगले जन्म में संगमक का जीव राजगृह नगर में गोभद्र सेठ के यहाँ पुत्र के रूप में आया। वो पुत्र तुम्हीं हो, शालिभद्र। और वो ग्वालन तुम्हारी पिछले जन्म की माता थी।

यह बात सुनकर शालिभद्र को कर्म फल की गहनता समझ में आई। उसके बाद उन्होंने धन्य मुनि के साथ कठिन तप किया और समय के साथ मृत्यु के बाद दोनों देवगति में गए।

मीठी यादें

नीरू माँ सत्संग के लिए एक महात्मा बहन के घर रात को रुके थे। दूसरे दिन उन बहन ने नीरू माँ से बहुत ही उत्साह से पूछा, "नीरू माँ, आप जिस बेड पर सोए थे उस बेड पर मैं थोड़ी देर बैठूँ ताकि आपके परमाणु मुझमें आ जाएँ।"

नीरू माँ ने "हाँ" कहा।

जैसे ही वो बहन बेड पर बैठी कि तुरंत ही उनको ख्याल आया कि बेड तो बहुत कड़क था, चुभनेवाला। यह जानकर उन्हें बहुत दुःख हुआ कि नीरू माँ कुछ भी बोले बिना या शिकायत किए बिना उस बेड पर सोते रहे।

उन्होंने तुरंत नीरू माँ से पूछा, "आपने बताया क्यों नहीं कि बेड कड़क है?"

नीरू माँ बहुत शांति से बोले, "यह तो चलता है।"

महात्मा बहन ने तुरंत ही नीरू माँ का बेड बदलवा दिया।

ज्ञानी कैसे चुपचाप एडजस्टमेन्ट ले लेते हैं।

पज़ल के जवाब

१.

२.

३. 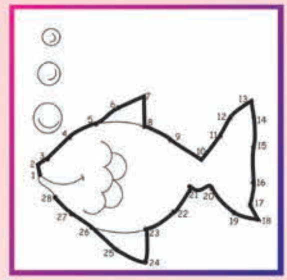

अपने आपको परखकर देखो! - जवाब

सुमित - हाँ, क्योंकि ज़रूरत के समय सुमित ने रोनक की प्रेम पूर्वक मदद की।

प्रतीक - नहीं, क्योंकि दोस्त की नेगेटिव बात की चर्चा की, वह भेद डाल रहा था।

गौतम - हाँ, क्योंकि उसने दोस्त का पॉज़िटिव देखने और उसके साथ एडजस्ट करने के लिए कहा।

ध्रुव - हाँ, क्योंकि उसने रोनक को गलत रास्ते जाने से रोककर, प्रामाणिकता का सही रास्ता बताया।

शिव - नहीं, क्योंकि उसने रोनक को अप्रामाणिकता के गलत रास्ते पर जाने के लिए प्रोत्साहित किया।

अभिषेक - हाँ, क्योंकि उसने रोनक को चीटिंग करने से रोका और उसकी मदद के लिए तैयार था।

पुनीत - नहीं, क्योंकि वह खुद चीटिंग करके मार्क्स लेता और उसने रोनक को भी करने के लिए प्रोत्साहित किया।

न्यूज़ीलैन्ड, सींगापोर और ओस्ट्रेलिया में पूज्य श्री के सानिध्य में बच्चों के द्वारा प्रस्तुत किए गए प्रोग्राम की एक झलक

Akram Express

January 2015
Year : 2, Issue : 10
Conti. Issue No.: 22

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No**., २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.